आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received: 03\12\2021; Revised: 10\12\2021; Accepted: 16\12\2021; Published: 24\12\2021

गिरमिट प्रथा के उन्मूलन में पंडित तोताराम सनाढ्य का योगदान

सरिता देवी चन्द
प्राध्यापिका
फिजी नेशनल यूनिवर्सिटी,
लौतोका फिजी

सरिता देवी चन्द, **गिरमिट प्रथा के उन्मूलन में पंडित तोताराम सनाढ्य का योगदान**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021, (142-145)

सारांश

भारत गौरव - पंडित तोताराम सनाढ्य जी आर्काटीयों के जाल में फंसकर गिरमिट प्रथा के अंतर्गत फीजी द्वीप आए और यहाँ उन्होंनें अपने जीवन के इक्कीस वर्ष व्यतीत किए | इस दरम्यान उन्होंने भारतीय श्रमिकों पर गिरमिट के अमानवीय प्रथा के अंतर्गत की जानेवाले अत्याचार और उनकी दुर्गति का अनुभव किया | शर्तबंदी प्रथा से मुक्ति पाने के बाद उन्होंने यथाशक्ति दीनदुखी श्रमिकों की मदद की और हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार किया | भारत लौटने पर पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी की सहायता से पंडित तोताराम सनाढ्य जी की पुस्तक 'फीजी में मेरे २१ वर्ष' प्रकाशित हुई | इस पुस्तक में उन्होंने गिरमिटियों के प्रति हो रहे घोर अत्याचार का विस्तृत विवरण दिया जिसके कारण इस पुस्तक की ख्याति इतनी बढ़ी की इसे भारत की कई भाषाओँ में अनूदित किया गया | कई समाचार पत्रों में भी इस पुस्तक के विषय में प्रशंसात्मक लेख लिखे गए | पंडित तोताराम सनाढ्य जी की इस पुस्तक ने अन्यायपूर्ण और अमानुषिक शर्तबंदी गुलामी प्रथा याने गिरमिट प्रथा को समाप्त करने में महान योगदान प्रदान किया |

फीजी में गिरमिट प्रथा के विरुद्ध संघर्ष करने वाले उत्तर प्रदेश फिरोजाबाद जिले के पास हीरौंगी गांव में जन्में पंडित तोताराम सनाढ्यजी नौकरी की तलाश में भटकते हुए एक आरकाटी के जाल में जा फसें जिसने उन्हें

फीजी जाने का सुझाव दिया। हालांकि उन्हें फीजी के विषय में बहुत कम जानकारी थी फिर भी उन्होंने नौकरी के लिए फीजी जाना स्वीकार किया | वे ब्राह्मण जाति के थे परन्तु फीजी में काम करने के लिए तोताराम ने एक ठाकुर याने योद्धा जाति के रूप में दाखिल हुवे । सफ़र के लिए सब औपचारिकताएं पूरी होने पर उन्होंने 26 फरवरी 1893 को जमुना नाम के जहाज पर सवार होकर कलकत्ता से निकले और तीन महीने बाद 28 मई को फीजी द्वीप में आ पहुँचे।

फीजी पहुँचते ही उन्हें यहाँ के सबसे बड़े द्वीप, वीतीलेवू के रेवा जिले में एक कोलोनियल शुगर रिफाइनिंग कंपनी (सी एस आर) के कॉलोनी में अनुबंधित किया गया। भले ही उन्हें पांच वर्षों तक एक गिरमिटिया के रूप में काम कराया गया फिर भी वे निडर होकर अपने तथा अन्य मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे | अपनी शर्त पूरा करने के बाद पंडित तोताराम ने एक छोटे किसान तथा एक पुजारी के हैसियत से फीजी में अपना कार्य शुरू किया। साथ ही साथ उन्होंने अपना अधिकांश समय उन गिरमिटिया मजदूरों की सहायता में लगाया जो गिरमिट प्रथा के अंतर्गत यहाँ संघर्षमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस दौरान वे भारत के उन नेताओं के सम्पर्क में रहे जो भारत के स्वतंत्रता हेतु कार्यरथ थे | इन नेताओं के सम्पर्क में होते हुए उन्होंने भारत से अधिक संख्या में शिक्षक, वकील, कार्यकर्ता आदि भेजने का अनुरोध किया ताकि फीजी के भारतीय मजदूरों की दुर्गति को कम किया जा सके तथा उन्हें न्याय दिलाया जा सके ।

तोतारामजी ने अपने गरिमामय व्यवहार, अपनी बुद्धिमता, अपने धार्मिक विचारों और अपने वाद-विवाद कौशल तथा वक्तवय से सभी को प्रभावित किया। प्रभावित होने वालों में शामिल थे रेवेरेंड बर्टन, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरु, सी. एफ़ एंड्रूस, रविन्द्र नाथ टैगोर तथा पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी |

फीजी में 21 वर्षों के निवास के बाद तोताराम सनाढ्यजी अपनी पत्नी गंगा देवी के साथ 3 अप्रैल 1914 को भारत लौट गए । लेकिन उनके वापस लौटने पर फीजी में भारतीयों ने बहुत दुःख महसूस किया, क्योंकि वह कॉलोनी के प्रमुख भाषण करनेवालों और बहस करनेवालों में से एक थे | इस विषय में 'द पैसिफिक हेराल्ड' में लिखा गया, " कि भले ही भारतीय दुखी थे परन्तु यह तो समझने वाली बात थी की वो अच्छे के लिए ही वापस जा रहे थे ।"

भारत वापस लौटने के तत्पश्चात, उन्होंने 15 जून, 1914 में हिंदी के पत्रकार तथा शिक्षक पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी से मुलाकात की, जिनकी गहरी दिलचस्पी प्रवासी भारतीय समुदायों के मामलों में थी | पंडित तोतारामजी ने अपने और फीजी के अन्य गिरमिटियों के अनुभव के बारे में उनको बताया। पंडित चतुर्वेदी जी ने उनकी दर्दनाक कहानी और व्यथा सुनने के बाद उनकी आत्मकथा "फीजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष" नामक पुस्तक लिखी और प्रकाशित करवाई | इस पुस्तक के प्रकाशित होकर वितृत होने पर पूरे हिंदुस्तान में शोर तथा तहलका मची क्योंकि उसमें गिरमिट प्रथा के अंतर्गत गिरमिटिया मजदूरों की संघर्ष और अनेक दर्दनाक घटनाएं लिखी गई थी | इनमें शामिल थीं महिलाओं पर किये गए अत्याचार, खासकर नारायणी और कुंती की कहानी जो तोताराम ने बनारसीदास को सुनाया था |

'फीजी में मेरे २१ वर्ष' नामक पुस्तक में तोतारामजी ने गिरमिट प्रथा के अनुभव के कई पहलुओं पर प्रकाश डाला जिनमें शामिल हैं औपनिवेशिक सरकार की हिंसा, प्रवासी भारतीयों के बीच नैतिक और धार्मिक मूल्यों का पतन, भारतीय महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, तथा मजदूरों की विवशता **जो हर** एक भारतीय के दिल को छू देने वाले है | साथ ही साथ ओवार्सियों का श्रमिकों पर मनमाना अत्याचार, तथा कुंती और नारायणी की दर्दनाक कहानियाँ जो अधिक् लोकप्रिय हुए और प्राणिमात्र को हिला दिए | इस पुस्तक की ख्याति और बढ़ी जब पंडितजी ने अपने पुस्तक में फीजी के प्रवासी भारतवासियों के विषय में कुछ निष्पक्ष लोगों की विचार भी लिखी |

इन में दो प्रमुख लोग शामिल हैं, कुमारी हेना: डड्ली और प्रसिद्ध मिशनरी, रेवरेंड जे. डब्लू. बर्टन | ऑस्ट्रेलियन मेथोडिस्ट मिशनरी, कुमारी हेना: डड्ली को फिजी के त्रसित भारतवासियों से बहुत सहानुभूति था | तोताराम सनाढ्य लिखते हैं की उन्होंने श्रमिकों की हालत पर दया दृष्टि दिखाते हुए एक पत्र 'इंडिया' नामक पत्र में भेजा था, जिसका प्रमाण पंडितजी ने अपने पुस्तक में शामिल किया है | कुमारी डड्ली ने खुलेआम उन दरिंदों का पर्दा फाश किया जो असहाय अबलाओं पर अत्याचार और उनका शोषण करते थे | इसी प्रकार बार्टन साहब ने भी कुमारी डड्ली की भांति अपने विचारों का कथन किया जो पंडित तोताराम सनाढ्य के पुस्तक, 'फीजी में मेरे २१ वर्ष' में विद्धमान है | इस पुस्तक का वितरण होते ही भारत के कई प्रान्तों में घनघोर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ | तोताराम सनाढय ने इन मौलिक कथनों को रचकर इस पुस्तक के सहारे कई लोगों को संघटित किया जिन्होंने इस कुप्रथा को ख़त्म करने के लिए आवाज उठाई | उन्होंने लोगों तक यह सन्देश पहुँचाया की, "प्रत्येक भारतवासी का यह कर्तव्य है कि इस प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन में सहायता करें" |

पंडित जी की लिखी हुई पुस्तक, 'फिजी में मेरे २१ वर्ष' लोकप्रिएता के कारण भारत के अनेको भाषाओँ में अनूदित हुए | हिंदी, अंग्रेजी, बंगला , मराठी, गुजराती तथा उर्दू में प्रकाशित इस पुस्तक के माध्यम से पंडित तोतारामजी अपने लक्ष्य याने गिरमिट की कुप्रथा की समाप्ति को हासिल करने में सफल रहे | इसी समय, प्रसिद्ध दीनबंधू, श्री सी. ऍफ़. एंड्रयूस ने इस पुस्तक को अपने लिए अनुवाद किया और फीजी लाए | उनका कहना था की गिरमिट प्रथा के समाप्ति में यह पुस्तक बहुत सहायक होगी और वही हुआ | फलस्वरूप कई विद्वानों की सम्मति में गिरमिट प्रथा के विरुद आन्दोलन में इस पुस्तक ने प्रमाण दी है |

इसके अलावा, भारत के राष्ट्र कवी, श्री रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं की इस पुस्तक से प्रेरणा पाकर लोकप्रिय कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के पति ने एक नाटक लिखा था,"कुली प्रथा" जिसका बहुत चर्चा हुआ | उधर मैथलीशरण गुप्त भी प्रेरित होकर 'किसान' नामक काव्य की रचना की | इन सबसे, पूरे देश में और विदेश में गिरमिटिया मजदूरों तथा प्रवासी भारतीयों और उनकी दशा पर बहुत चर्चा होने लगी |

इस पुस्तक की सफलता ही फीजी में गिरमिट प्रथा की समाप्ति में सहायक बनी | कई पत्रों के संपादकों तथा संचालकों को भारतवासियों का अभिनन्दन है | पंडित तोतारामजी ने उन सभी महानुभावों को कृतज्ञता व्यक्त की जिन्होंने उनकी पुस्तक, 'फीजी में मेरे २१ वर्ष' को अपनाया और उनकी लक्ष्य तथा गिरमिट प्रथा के उन्मूलन

में सहायता प्रदान करते हुए उनके प्रयत्न को कामयाब बनाया | यह उन्हीं संपादकों की कृपा का फल है कि पंडित तोताराम सनाढ्यजी अपनी पुस्तक के चार सौ से अधिक प्रतियाँ हरिद्वार कुम्भ, लखनऊ साहित्य सम्मलेन तथा मद्रास कोंग्रेस के उत्सव पर बिना मूल्य वितरण कर सकें | इसके साथ ही पंडितजी ने हरिद्वार कुम्भ पर बारह दिनों तक गिरमिट प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया और पचास हज़ार विज्ञापन आर्कटियों के विरुद्ध बटवाया | फीजी की गिरमिट प्रथा को समाप्त करने के लिये इस पुस्तक में वर्णित अनुभव बहुत सहायक सिद्ध हुए।

आज यह पुस्तक, 'फीजी में मेरे २१ वर्ष' का एतिहासिक महत्त्व ही रह गया है परन्तु इस कुप्रथा को अंत करने में इस पुस्तक का विशेष योगदान है | बनारसीदास चतुर्वेदीजी लिखते है, 'यह प्रथा कितनी अन्यायपूर्ण तथा अमानुषिक थी, इस संबंध में यह पुस्तक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत की गई थी |' फीजी के गिरमिट प्रथा को समाप्त करने के लिए इस पुस्तक में वर्णित अनुभव बहुत सहायक सिद्ध हुए। फलस्वरूप, राजश्री गोखले, महामना मालवीयजी, महात्मा गांधीजी, दीनबंधु एंड्रयूस और पंडित तोताराम सनाढ्यजी के निरंतर और अथक परिश्रम से 1 जनुअरी,1920 को हमेशा के लिए गिरमिट प्रथा अंत कर दिया गया|

सन्दर्भ:

१. तोताराम सनाढ्य, (२००४) 'फीजी में मेरे २१ वर्ष', (पहला संस्करण)

२. बृज लाल, (२०१२) 'चलो जहाजी'

३. बृज लाल और योगेन्द्र यादव, (१९९४) 'भूत लेन की कथा'

४. https://www.setumag.com/2017/08/ Totaram-Sanadhya-21-years-history.html

५. https://bharatdarshan.co.nz/author-profile/132/totaram-sanadhya-fiji-writer.htm

****